एमएमपीसी-001

मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (**MBA**)/ मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (ऑनलाइन) **MBA(OL)** / मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (बैंकिंग और फ़ाइनेंस) (**MBF**)/ मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (फ़ाइनेंशियल मैनेजमेंट) (**MBAFM**)/ मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट) (**MBAHM**)/ मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (मार्केटिंग मैनेजमेंट) (**MBAMM**)/ मास्टर ऑफ़ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन (ऑपरेशन्स मैनेजमेंट) (**MBAOM**) / पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मार्केटिंग मैनेजमेंट (**PGDIMM**)/ पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन सर्विसेज़ मैनेजमेंट (**PGDISM**)

सत्रीय कार्य

2026-2027

जुलाई 2026 और जनवरी 2027 सत्र

एमएमपीसी -001: प्रबंधन कार्य एवं संगठनात्मक प्रक्रियाएँ

(सत्रीय कार्य को जमा करने के लिए जुलाई 2026 सत्र के लिए अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2026 है और जनवरी 2027 के लिए 30 अप्रैल 2027 है)

प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली –1100 68

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम का कोड	**:**	**एमएमपीसी-001**
पाठ्यक्रम का शीर्षक	**:**	**प्रबंधन कार्य एवं संगठनात्मक प्रक्रियाएँ**
सत्रीय कार्य का कोड	**:**	**एमएमपीसी -001/टी. एम. ए./ जुलाई /2026-27**

नोट: सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए तथा यह सत्रीय कार्य अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक को जमा कीजिए। जुलाई 2026 सत्र हेतु अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2026 तथा जनवरी 2027 सत्र हेतु 30 अप्रैल 2027 है।

1. समकालीन डिजिटल संगठनों में प्रबंधन के शास्त्रीय, व्यवहारवादी, प्रणाली तथा आकस्मिकता दृष्टिकोणों की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 21वीं सदी के हाइब्रिड एवं AI-सक्षम कार्यस्थलों के प्रबंधन हेतु एक समेकित प्रबंधकीय रूपरेखा तैयार कीजिए।

2. एक बहुराष्ट्रीय संगठन में कर्मचारी उत्पादकता में कमी, भूमिका की अस्पष्टता तथा भौगोलिक रूप से बिखरी टीमों के बीच समन्वय संबंधी समस्याएँ हैं। प्रबंधन सलाहकार के रूप में योजना, संगठन, स्टाफिंग एवं निर्देशन कार्यों को सम्मिलित करते हुए एक व्यापक प्रबंधकीय कार्ययोजना विकसित कीजिए तथा उपयुक्त प्रबंधन सिद्धांतों एवं व्यवहारों के आधार पर उसका औचित्य सिद्ध कीजिए।

3. 'अनिश्चितता, कार्यबल की विविधता तथा तकनीकी व्यवधानों के प्रबंधन में पारंपरिक नेतृत्व मॉडल अपर्याप्त होते जा रहे हैं।' इस कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। ज्ञान-आधारित संगठनों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहभागी निर्णय-निर्माण तथा कर्मचारी सशक्तिकरण को समाहित करते हुए एक समकालीन नेतृत्व एवं प्रेरणा मॉडल विकसित कीजिए।

4. मूल्यांकन कीजिए कि संगठनात्मक संरचना, संचार प्रणाली तथा संगठनात्मक संस्कृति सामूहिक रूप से नवाचार एवं संगठनात्मक स्थिरता को कैसे प्रभावित करती हैं। तीव्र गति से विकसित हो रहे स्टार्ट-अप के वैश्विक उद्यम में रूपांतरण हेतु एक रणनीतिक संगठनात्मक डिज़ाइन तैयार कीजिए। स्पष्ट कीजिए कि आपका प्रस्तावित डिज़ाइन संचार बाधाओं, सांस्कृतिक एकीकरण तथा रणनीतिक लचीलापन को कैसे संबोधित करेगा।

5. एक विनिर्माण संगठन डिजिटल परिवर्तन के साथ-साथ श्रम प्रथाओं, पर्यावरणीय स्थिरता तथा नैतिक प्रशासन से संबंधित आलोचनाओं का सामना कर रहा है। परिवर्तन प्रबंधन, नैतिक नेतृत्व तथा कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को समाहित करते हुए एक परिवर्तनकारी संगठनात्मक रणनीति विकसित कीजिए। भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं में ऐसी रणनीति के क्रियान्वयन की चुनौतियों का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

1. समकालीन डिजिटल संगठनों में प्रबंधन के शास्त्रीय, व्यवहारवादी, प्रणाली तथा आकस्मिकता दृष्टिकोणों की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। **21**वीं सदी के हाइब्रिड एवं **AI**-सक्षम कार्यस्थलों के प्रबंधन हेतु एक समेकित प्रबंधकीय रूपरेखा तैयार कीजिए।

उत्तर:

समकालीन डिजिटल संगठन केवल तकनीक से नहीं चलते; उनमें लोग, प्रक्रियाएँ, डेटा, डिजिटल प्लेटफॉर्म, बाहरी साझेदार और बदलता बाजार एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। इसलिए किसी एक प्रबंधन दृष्टिकोण को पूर्ण समाधान मानना उचित नहीं है। शास्त्रीय, व्यवहारवादी, प्रणाली और आकस्मिकता दृष्टिकोण अलग-अलग समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। डिजिटल और हाइब्रिड कार्यस्थल में इनका चयनात्मक तथा समेकित उपयोग अधिक उपयोगी है।

शास्त्रीय दृष्टिकोण का मूल बल कार्य-विभाजन, स्पष्ट अधिकार, उत्तरदायित्व, मानकीकरण और दक्षता पर है। डिजिटल संगठनों में इसकी प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। साइबर सुरक्षा, डेटा-गुणवत्ता, वित्तीय नियंत्रण, गुणवत्ता आश्वासन, सेवा-स्तर, परियोजना जिम्मेदारी और अनुपालन जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट प्रक्रिया तथा उत्तरदायित्व आवश्यक हैं। हाइब्रिड टीमों में भी भूमिका की स्पष्टता और निर्णय-अधिकार का निर्धारण भ्रम कम करता है। किंतु इसकी सीमा यह है कि अत्यधिक पदानुक्रम, सूक्ष्म नियंत्रण और कठोर नियम ज्ञान-कर्मियों की स्वायत्तता, नवाचार तथा त्वरित प्रतिक्रिया को बाधित कर सकते हैं। इसलिए शास्त्रीय सिद्धांत को 'नियंत्रण के अधिकतमकरण' के रूप में नहीं, बल्कि आवश्यक संरचनात्मक अनुशासन के रूप में अपनाना चाहिए।

व्यवहारवादी दृष्टिकोण ने यह स्थापित किया कि उत्पादकता केवल औपचारिक संरचना या वेतन का परिणाम नहीं है; प्रेरणा, समूह मानदंड, नेतृत्व, संचार, सहभागिता और सामाजिक संबंध भी महत्वपूर्ण हैं। हाइब्रिड कार्य में अनौपचारिक संपर्क कम होने, अकेलेपन, डिजिटल थकान, विश्वास की कमी और टीम पहचान के कमजोर होने की संभावना रहती है। ऐसी स्थिति में प्रबंधक को संवाद, मान्यता, निष्पक्षता, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, सीखने और सहयोग पर ध्यान देना पड़ता है। AI-सक्षम